CGArena
अघोरानंद की अप्सरा
अनिल शेखर "अमस"

भूमिका

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

यह कथा तांत्रिक अघोरानंद के जीवन पर आधारित है | इस श्रंखला मे यह दूसरी कहानी है | इससे पहले की कहानी आप "तांत्रिक अघोरानंद" मे पढ़ सकते हैं |

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है ,

इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण

करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है |

अंत में .....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

अघोरानंद की अप्सरा

अघोरानंद यानी मै एक ग्रहस्थ युवा था, जो 26 साल की उम्र में एक आश्चर्यजनक घटना के बाद अघोर तंत्र साधना ओं के क्षेत्र में प्रवेश करता है । मेरी पत्नी माला ! एक रूपवती युवती थी | मेरा गृहस्थ जीवन भोग विलास से पूर्ण चल रहा था | अचानक परिस्थितियों ने मोड़ लिया और माला का निधन हो गया | उसके निधन के बाद अपने गुरु की कृपा से साधना के क्षेत्र में प्रवृत्त हुआ | मैं तंत्र साधनाओं के रहस्यमय संसार में प्रविष्ट हो गया | एक अघोरी गुरु भाई का मुझे मार्गदर्शन मिला और मैंने शमशान के अधिष्ठाता महाभैरव को प्रसन्न किया.....

इसके विषय में जानकारी के लिए आप पढ़ सकते हैं मेरी पूर्व रचना तांत्रिक अघोरानंद जो गूगल पर प्रकाशित है.....

ऐसा कहा जाता है कि प्रत्येक सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री होती है और यह बात तंत्र साधना के क्षेत्र में भी पूरी

तरह से लागू होती है । तंत्र साधना ओं में दो प्रकार की साधनाएं होती है जिसमें एक को वाम मार्गी साधना कहा जाता है और दूसरे को दक्षिण मार्गी साधना कहा जाता है । वाममार्गी साधना में अत्यंत गोपनीयता बरती जाती है | इस साधना में सफलता जल्दी मिलती है | लेकिन ! रास्ता बेहद कठिन होता है | दूसरी ओर दक्षिण मार्ग है ! जो ज्यादा प्रकट है | ज्यादा लोग इसके बारे में जानते हैं | साधनाएं दक्षिण मार्ग से भी सिद्ध की जा सकती हैं | लेकिन ! उसमें समय और परिश्रम दोनों ज्यादा लगता है | आमतौर पर जो पूजा पाठ की पद्धति और साधना की विधियां प्रचलित है वह सारी की सारी दक्षिण मार्गी है |

वाममार्गी साधना

वाममार्गी साधना में स्त्री और पुरुष दोनों संयुक्त रूप से साधना में संलग्न होते हैं | ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मांडीय शक्तियों का धनात्मक भाग्य पॉजिटिव एनर्जी पुरुष है और ऋणात्मक भाग या नेगेटिव एनर्जी स्त्री है | इन दोनों के मिलने से शक्ति का चक्र पूरा होता है | जिससे साधना और शक्तियों का मार्ग प्रशस्त होता है | यह साधना है न सिर्फ जटिल है वही बेहद खतरनाक भी है | या तो इन साधना में सिद्धि प्राप्त होती है ! या साधक मानसिक रूप से विचलित हो जाता है ! या मृत्यु को प्राप्त होता है ! इसलिए आमतौर पर इन साधनाओं में वही लोग प्रवृत्त होते हैं, जो तंत्र साधनों के क्षेत्र में ही जीवन गुजारने के इच्छुक होते हैं | या फिर गृहस्थ जीवन से विदा ले चुके होते हैं |

इस मार्ग में शक्ति या भैरवी को पूजनीय माना जाता है | भोग विलास के लिए अनेक स्त्रियों का उपयोग करने वाले वाममार्गी नहीं बल्कि ढोंगी होते हैं | उनका प्रमुख

उद्देश्य अपनी वासना की पूर्ति होता है इसलिए इस मार्ग को समाज में गलत दृष्टि से देखा जाता है ।

तंत्र साधना ओं के क्षेत्र में सबसे विचित्र है अघोर पंथ अघोर पंथ अनंत काल से चला आ रहा है जिसके अधिष्ठाता अघोरेश्वर भगवान शिव हैं | भगवान शिव को देवों के देव और महादेव कहा जाता है क्योंकि उनकी विशिष्टता है बाकी सभी देवताओं से पूरी तरह से अलग और अतुलनीय है ।

वे सारी सृष्टि की स्वामिनी जगदंबा के पति हैं ! लेकिन नग्न अर्थात दिगंबर है ! उनके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं है ! वह उस चीज से अपना श्रृंगार करते हैं ! जिसे पूरा विश्व किसी काम का नहीं मानता और वह है शमशान की भस्मी | इसी भस्म से उनका श्रृंगार होता है और उनके आभूषणों के रूप में सर्प सज्जित है ! ऐसे अद्भुत देवता है भगवान शिव ! उन्हीं के शिष्य और वंशज माने जाते हैं अघोरी ।

अघोरी

अघोरियों के बारे में कई प्रकार की कहानियां प्रचलित है | पहली तो यह कि वे बहुत गुस्सैल होते हैं और अनाप-शनाप गालियां बकते हैं | क्रोध आने पर किसी को लात घूसे से पीट भी देते हैं | कभी डंडा भी मार देते हैं | सबसे मजेदार बात यह है कि कई ऐसी घटनाएं हैं | जिसमें अघोरियों के द्वारा पीटे जाने या उनकी लात खाने के लिए लोग लालायित होते थे, क्योंकि उससे उनका भाग्य बदल जाता था | कई ऐसे अघोरी हुए हैं जो इस मसान में निर्लिप्त पड़े रहते | भोग आकांक्षी ग्रहस्थ उनके पास बार-बार इस आशा के साथ जाते थे कि वह अपनी डंडे की चोट मार दे या एक लात ही मार दे तो जीवन संवर जाए | ऐसा विचित्र होता है अघोरियों का संसार ! उनके इस प्रकार के व्यवहार का प्रमुख कारण होता है लोगों को दूर रखना क्योंकि अघोर साधना ओं के लिए आवश्यक है कि अघोरी एकांत में रहे |

अघोर साधना में किसी प्रकार के नियमों का, भोजन का, पूजन सामग्री का, बंधन नहीं होता है | अगर अघोरी सोच ले तो वह पत्थरों से भी पूजन कर सकता है, पानी से भी पूजन कर सकता है, और मट्टी से भी पूजन कर सकता है | यह उसकी क्षमता है की उसका पूजन अघोरेश्वर महादेव स्वीकार कर ले | इसी अघोर मार्ग की कुछ घटनाओं को लेकर हमारी कहानी का नायक अघोरानंद और उसकी साधना जगत की कथाओं से हम रूबरू होंगे |

अघोर दीक्षा

अघोर दीक्षा प्राप्त करने के बाद मुझे 21 दिनों तक गुरु मंत्र का जाप श्मशान में बैठकर करना था | इन 21 दिनों में किसी भी प्रकार का संपर्क या बातचीत दुनिया के लोगों से नहीं रखना था । मेरे लिए यह थोड़ा सा कठिन विषय था क्योंकि सरकारी नौकरी में था | मेरे पास अपना घर भी था | सबसे पहले मै अपने कार्यालय गया और 1 महीने की छुट्टी का आवेदन दिया | मेरी मानसिक स्थिति को देखते हुए छुट्टी का आवेदन पास भी हो गया | अब बच गया घर ! तो अपने एक दोस्त को उसकी जिम्मेदारी सौंपी और साथ ही यह भी कह दिया कि अगर अच्छे दामों पर बिक जाए तो मैं इसे बेचने को भी तैयार हूं | दोस्त खुद उस मकान को लेने को तैयार था लेकिन उसके पास एक मुश्त देने के लिए पैसे नहीं थे | उसने प्रस्ताव रखा कि हर महीने ₹8000 के हिसाब से वह मकान का मूल्य धीरे धीरे चुका सकता है | यह और भी अच्छी बात थी क्योंकि नौकरी छोड़ने का मन बना चुका था | इस प्रकार से कुछ दिनों के लिए मेरी मासिक आय का इंतजाम हो रहा था | मैने इसे स्वीकार

कर लिया और मैं दोस्त को घर सौंपकर स्मशान की ओर चल पड़ा |

श्मशान में पहुंचने के बाद मैं बाबा से मिला | बाबा से मिलकर साधना की विधि जानी | गुरु ने मंत्र दिया था | अब उसी मंत्र का अघोर रूप में ध्यान करना था | जाप करना था और गुरु सिद्धि प्राप्त करनी थी | साधनाओं के क्षेत्र में गुरु मंत्र की सिद्धि को सबसे ज्यादा महत्व दिया जाता है | गुरुमंत्र ही आगे साधनाओं के समय विभिन्न प्रकार का मार्गदर्शन और रक्षा प्रदान करता है | इसलिए गुरु मंत्र की साधना सबसे पहले संपन्न की जाती है और सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है |

ध्यान संपन्न करने के बाद मंत्र जाप का क्रम प्रारंभ हो गया | इस प्रकार मैं रोज रात के 11:30 बजे अपना जाप प्रारंभ करता और सुबह ब्रह्म मुहूर्त में 108 माला का जाप होता | इसी प्रकार 11 दिन निकल गए | बारहवीं रात्रि जब मैं मंत्र जाप कर रहा था तभी घुंघरू की आवाज सुनाई देने लगी | शुरू मे भ्रम हुआ की ऐसा आभास हो रहा है | लेकिन ! घुंगरू की आवाज लगातार मेरे इर्द-गिर्द सुनाई देती रही | जब ऐसा लगभग आधे घंटे तक चला तो मुझे समझ में आया कि वास्तव में घुंगरू बज रहे हैं |

मैंने अपनी आंखें खोली और देखने का प्रयास करने लगा | लेकिन कुछ दिखाई नहीं दिया और मैं पुनः मंत्र जाप में संलग्न हो गया | पूरी रात इसी तरह से घुंघरू की आवाज सुनाई देती रही | कभी दूर जाती घुंघरू की आवाज आती और कभी पास आते हुए घुंघरू की आवाज आती | कुछ समय के बाद मुझे आभास हुआ की यह भटकाने की प्रक्रिया है | इसलिए मैं अपने मंत्र जाप में लगा रहा और बाकी सारी रात मैने इस पर

कोई ध्यान नहीं दिया | 12 वीं रात इस प्रकार से गुजर गई.....

सुबह डोम बाबा से मिलने पर मैने अपना अनुभव बताया | बाबा ने सावधान रहने और विचलित ना होने की सलाह दी | 13 वीं रात साधना का क्रम 11:30 बजे फिर से प्रारंभ हुआ | 12:00 बजते बजते घुंघरू की झंकार फिर से प्रारंभ हो गई | लेकिन आज घुंघरू की झंकार केवल झंकार नहीं थी | ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई नर्तकी नृत्य कर रही हो और उसके घुंघरू बज रहे हो | मैंने फिर देखने के लिए आंखें खोली | लेकिन ! कोई दिखाई नहीं दिया | घुंघरू की आवाज स्पष्ट प्रतीत होती रही | सारी रात ऐसा लगता रहा कि चौबारे के चारों तरफ कोई नर्तकी घुंघरू बांध पूरी तेजी के साथ नृत्य कर रही है | दो-तीन बार मैने आंखें खोलकर देखने की कोशिश की | लेकिन जब कुछ नहीं दिखा तो अपने ध्यान में वापस लग गया | मंत्र जाप उस दिन का भी संपूर्ण हो गया |

ब्रह्म मुहूर्त में पूजन इत्यादि संपन्न करके जब मैं विश्राम के लिए थोड़ी देर को लेटा तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे

कोई ध्यान नहीं दिया | 12 वीं रात इस प्रकार से गुजर गई.....

सुबह डोम बाबा से मिलने पर मैने अपना अनुभव बताया | बाबा ने सावधान रहने और विचलित ना होने की सलाह दी | 13 वीं रात साधना का क्रम 11:30 बजे फिर से प्रारंभ हुआ | 12:00 बजते बजते घुंघरू की झंकार फिर से प्रारंभ हो गई | लेकिन आज घुंघरू की झंकार केवल झंकार नहीं थी | ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई नर्तकी नृत्य कर रही हो और उसके घुंघरू बज रहे हो | मैंने फिर देखने के लिए आंखें खोली | लेकिन ! कोई दिखाई नहीं दिया | घुंघरू की आवाज स्पष्ट प्रतीत होती रही | सारी रात ऐसा लगता रहा कि चौबारे के चारों तरफ कोई नर्तकी घुंघरू बांध पूरी तेजी के साथ नृत्य कर रही है | दो-तीन बार मैने आंखें खोलकर देखने की कोशिश की | लेकिन जब कुछ नहीं दिखा तो अपने ध्यान में वापस लग गया | मंत्र जाप उस दिन का भी संपूर्ण हो गया |

ब्रह्म मुहूर्त में पूजन इत्यादि संपन्न करके जब मैं विश्राम के लिए थोड़ी देर को लेटा तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे

बगल में कोई आकर लेट गया हो | मैने अपने सर को झटक कर दोबारा देखने की कोशिश की लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया | सोचा कि शायद भ्रम हो ! लेकिन कमरे में बेहद मादक गंध फैली हुई थी ! ऐसा लग रहा था जैसे गुलाब और चमेली के पुष्पों को छिड़क दिया गया हो ! जबकि वहां पर उस मशान की चिताओं और कुत्तों के अलावा कुछ भी नहीं था |

मैं थोड़ी देर सोच में पड़ा रहा मेरी समझ में कुछ नहीं आया फिर थोड़ी देर बाद नींद आने लगी और मैं सो गया | तीन चार घंटे की नींद के बाद जब उठा तब भी कमरा उसी प्रकार महक रहा था | ऐसा लग रहा था जैसे गुलाब और चमेली के इत्र का बहुत बड़ी मात्रा में छिड़काव कर दिया गया हो | मुझे समझ में नहीं आया कि यह खुशबू कहां से आ रही है |

साधना की 15 वीं रात

वह साधना की 15 वीं रात थी !

मेरा मंत्र जाप का क्रम चालू था !

चबूतरा अभी चमेली की महक से पूरी तरह आजाद नहीं हुआ था !

हल्की-हल्की भीनी भीनी खुशबू अभी भी फैली हुई थी !

ग्यारह माला मंत्र जाप पूरी होते-होते फिर से ! घुंघरू की आवाज का आना चालू हो गया !
घुंघरू की आवाज इतनी स्पष्ट थी जैसे मेरे पास ही घुंघरू पहने हुए कोई नर्तकी नृत्य कर रही हो, लेकिन कुछ स्पष्ट दिख नहीं रहा था |

मंत्र जाप चलता रहा और लगभग रात के 1 बजे के आसपास मुझे घुंघरू की आवाज आनी बंद हो गई !
ऐसा एहसास हुआ जैसे मेरे आसन के पास कोई आकर बैठा है ! मैं एक स्पर्श जैसा महसूस कर सकता था !

अब भी मुझे कुछ दिख नहीं रहा था ! इसी उहापोह में रात कटी और मंत्र जाप भी पूर्ण हुआ |

सोलहवीं रात मंत्र जाप का प्रारंभ होते ही फिर से कमरा उसी प्रकार चमेली की महक से भर गया | अब यह रोज का क्रम हो गया था | इसलिए मुझे भी आदत सी पड़ गई थी | मैं अपने जाप में लग गया.....

कुछ समय के बाद मेरे सामने एक अत्यंत ही रूपवान षोडश वर्षीय युवती आकर बैठ गई !

उसका सौन्दर्य व्याख्या से परे था !

उसका रंग गोरा , चटक गोरा, जैसे पंजाब की युवतियों का होता है, वैसा ही था ...

उसकी काली कजरारी आंखें बहुत कुछ अनकहे को भी कह जाने में सक्षम थी ..... जिसे बोलती हुई आंखें कहते हैं |

चेहरे का हर हिस्सा चाहे, वह आंख हो, नाक हो, मादक होठ हो, सब सौन्दर्य की परिभाषा को अभिव्यक्त करता हुआ सा प्रतीत होता था .....

उसके बाल खुले हुए थे | जिन्हें हल्के जूड़े से उसने बांधा हुआ था और वे उसके कानों से होते हुए कमर तक किसी बेचैन नदी की तरह बिखरे हुए थे ....

ऐसा प्रतीत होता था जैसे खजुराहो में लगी हुई अप्सरा की मूर्तियों में से किसी मूर्ति में प्राण आ गई हो |

उसका हर अंग यौवन की परिपूर्णता से भरा हुआ और शास्त्रीय व्याख्या के अनुसार सुडोल था ....|

उसके शरीर पर वस्त्र के नाम पर एक झीनी सी साड़ी थी |

जिसमें से लगभग सब कुछ दिख रहा था .....

एक क्षण को मेरी आंखें उसे देख कर स्तब्ध रह गई और मैं मंत्र जाप करना भी भूल गया | कुछ समय तक मैं उसी स्थिति में अचंभित स्तंभित सा बैठा रहा !

मेरा मंत्र जाप भी रुक गया !

फिर वही अंदर की संकेत प्रणाली ने फिर सजग किया और मेरा मंत्र जाप चालू हो गया | बाबा ने मुझे बता दिया था कि किसी हालत में नित्य के मंत्र जाप को पूरा किए बिना न तो आसन छोड़ना है और ना ही कोई और कार्य करना है | इस बात का ध्यान आते ही मैं फिर से मंत्र जाप में लग गया |

मेरी यह हरकत उसे नागवार गुजरी |

शायद उसे अपने सौंदर्य का अपमान लगा हो |

उसकी आंखों में झुंझलाहट के भाव स्पष्ट हुए लेकिन मैं अपने मंत्र जाप में लगा रहा ....

पूरी रात वह मेरे सामने बैठी रही और मैं भी अपनी पूरी कोशिश करता हुआ मंत्र जाप में लगा रहा |

ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरे धैर्य की परीक्षा ले रही हो |

मुझे ऐसा लग रहा था कि गुरुवर मेरी परीक्षा ले रहे हैं | जिसमें मुझे पास होना है ताकि मैं अपने साधना के मार्ग पर आगे बढ़ सकूं और गुरु के विश्वास को पर खरा उतर सकूं ...

हम दोनों की इसी आपसी कशमकश में मंत्र जाप भी पूर्ण हो गया और रात भी गुजर गई |

जाप पूरा हो जाने के बाद मैंने गुरुवर को प्रणाम किया आसन को प्रणाम किया और जाकर चुपचाप सो गया | मुझे उसकी उपस्थिति का आभास होता रहा ! कभी घुंघरू की खनक ! कभी सरसराहट की आवाज ! कभी वही चमेली की मादक खुशबू आती रही और मैं अपने आप को नियंत्रित करने की कोशिश करता रहा | इस तरह से सोलहवीं रात भी गुजर गई |

सत्रहवीं रात फिर से साधना का क्रम प्रारंभ हुआ | रोज की घटनाओं के बाद मुझे भी ऐसी किसी घटना की प्रतीक्षा रहती थी, लेकिन वह पूरी रात बिना किसी घटना के सामान्य रूप से निकल गई | मैंने भी राहत की सांस ली | यह सोच कर कि परीक्षण शायद पूरा

हो गया होगा | आने वाली 4 रातें बाकी थी जिसके बाद मुझे पूर्णाहुति करनी थी | दिन का समय लगभग पूरा ही सोने में गुजर जाता था और सारी रात साधना में ..... यही क्रम बन गया था |

पुष्प देहा अप्सरा

अठारहवीं रात आई और फिर मैंने अपना मंत्र जाप प्रारंभ किया ....

अर्धरात्रि होते तक सब कुछ सामान्य रहा | अर्धरात्रि होते ही फिर से चमेली की खुशबू कमरे में फैलने लगी !

कुछ देर के बाद एक बेहद आकर्षक षोडश वर्षीय कन्या प्रकट हुई !

उसका रंग सांवला था !
उसके बाल घुंघरालू थे | जो उसके कंधों तक बिखरे हुए थे |
उसने गुलाबी रंग के वस्त्र पहने हुए थे | जिसमें से उसकी पूरी देहाकृति दिख रही थी | उसने अपने वक्षस्थल पर एक झीना आंचल भी लिया हुआ था, लेकिन वह ऐसा था जो ढाक कम रहा था और दिखा ज्यादा रहा था |

उसने नृत्य की मादक भंगिमा ओं के साथ अपना लास्य प्रस्तुत करना प्रारंभ किया | वह मेरे चारों तरफ घूम रही थी और बेहद लुभावने अंदाज में नृत्य कर रही थी | उसे देख कर स्वयं पर नियंत्रण रखना बहुत मुश्किल हो रहा था | मैंने अपनी आंखें कसकर भींच ली और मंत्र जाप करता रहा | उसकी उपस्थिति का आभास मुझे बराबर होता रहा | वह मेरे चारों तरफ घूम घूम कर नृत्य करती रही और मैं आंखें भीन्च्कर बैठा रहा , क्योंकि मुझे अपने आप पर भरोसा नहीं रह गया था कि मैं उसे देखकर नियंत्रित रह पाऊँगा .....

आँखें भींचे भींचे ही मैंने अपना पूरा मंत्र जाप समाप्त किया .....

आखरी माला समाप्त करके गुरु को प्रणाम करके मैंने जब आंखें खोली तो वह युवती हाथ जोड़कर सामने विनम्र मुद्रा में बैठी हुई थी |

मेरी आंख खुलते ही उसने मुझसे पूछा - मेरे लिए क्या आदेश है ?

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या बोलूं ?

मुझे यह भी नहीं समझ में आ रहा था कि मैं गुरु मंत्र का जाप कर रहा हूं और यह देवी कहां से प्रकट हो जा रही है | उसने मेरे भाव को समझते हुए स्वयं अपना परिचय दिया और बताया कि वह **पुष्प देहा अप्सरा** है |

यह नाम मैंने सुना अवश्य था लेकिन ऐसी अतुलनीय सौंदर्य की स्वामिनी होगी इसकी कल्पना भी नहीं की थी !

स्वर्ग की वही अप्सरा अपने साक्षात स्वरूप में मेरे सामने बैठी हुई थी !

मेरी जुबान पर ताले पड़ गए थे ! मैं कुछ भी नहीं बोल पा रहा था !

वैसे साधनाकाल मे नियमानुसार मुझे किसी से भी कोई भी बात कहने की अनुमति नहीं थी .....

मेरे मौन को तोड़ने की काफी चेष्टा करने के बाद जब असफल रही तो उसने प्रस्थान किया |

उन्नीसवीं रात मैं फिर से मंत्र जाप के लिए बैठा | वह काली मंदिर स्मशान के एक भाग में स्थित था | शमशान साधनाओं में शमशान जागरण नाम की एक क्रिया भी होती है | जिसमें श्मशान में स्थित सारी शक्तियों को जागृत करके फिर साधना संपन्न की जाती है | इस बारे में मैंने पढ़ा जरूर था, लेकिन इसका अनुभव कभी नहीं किया था |

उस रात्रि जैसे ही मैं साधना पर बैठा मुझे भयानक ध्वनिया सुनाई पड़ने लगी ....

ऐसा लगा जैसे कहीं बम फट रहा हो !

कोई पेड़ टूटकर गिर रहा हो !

कोई जोर जोर से चिल्ला रहा हो !

कोई भयानक अट्टहास कर रहा हो !

इस प्रकार की भयानक ध्वनिया मेरे चारों तरफ सुनाई देने लगी | प्रत्यक्ष रूप से कोई दिखाई नहीं दे रहा था

लेकिन भयानक आवाजें सारी रात चलती रही | कुत्ते भी अपना संगीत बीच बीच मे बजाते रहे |

उन आवाजों के बीच भयभीत !

उत्साहित !!

जिज्ञासु !!!

इन सारे भावों के सम्मिलित मिश्रण के साथ में बैठकर मंत्र जाप करता रहा | वह रात इन्हीं आवाजों के साए में गुजर गई |

मशान जागरण और भयानक आकृतियाँ

अब दो रातें और बची थी | मैं सोच रहा था कि अब क्या होगा ? पिछली रात तो सिर्फ भयानक आवाजों ने पीछा किया था | इस रात को कहीं भयानक आवाजें निकालने वाली शक्तियां वास्तव में प्रकट ना हो जाए | यह सोच सोच कर मैं सशंकित भी था और उत्तेजित भी कि गुरु सानिध्य में अल्प समय के साधना काल में कितना कुछ अनुभव प्राप्त हो रहा है |

नियत समय पर मैं अपने आसन पर बैठा | मंत्र जाप चालू हो गया | शुरु में सब कुछ शांत रहा | पंद्रहवीं माला समाप्त होते-होते भयानक आकृति वाली कई स्त्रियां मेरे चारों और दिखने लगी .....

उनमें से कुछ स्त्रियों की लंबाई 10 से 12 फुट की थी !

कुछ की लंबाई 2 से 4 फुट की थी !

तो कुछ की लंबाई 6 इंच से 1 फुट तक की थी |

उनकी लंबाई में जितनी विचित्रता थी, उससे भयानक उनका स्वरूप था !

कुछ की दो आंखें थी !

कुछ की एक आंख थी !

कुछ की कई आंखें थी |

शरीर भी उनका बड़ा विचित्र था | एक भयानक स्त्री के वक्षस्थल उसके कमर तक झूल रहे थे | एक के दांत उसके कंधों तक लंबे थे | एक के बाल उसकी एडियो तक पहुंच रहे थे तो एक पूरी तरह से गंजी थी | किसी का मुंह गधे की तरह था तो किसी का सांप की तरह !

ऐसे भयानक दृश्य की मैंने कल्पना भी नहीं की थी ! मेरा मंत्र जाप रुक गया | मुझे ऐसा लगा कि वहां से उठकर भाग जाना चाहिए , लेकिन फिर ध्यान आया कि गुरुवर है फिर चिंता किस बात की ? यह बात ध्यान में आते ही गुरु को प्रणाम करके आंखे बंद कर मैंने मंत्र जाप जारी रखा ....

वह आकृतियां मेरे चारों तरफ घूमती रही | कुछ आकृतियां तो आगे बढ़कर मेरे मुंह के पास, मेरी आंख के पास, तक आ जाती थी | आंखें बंद होने पर भी उनकी सांसों की हवा को मैं महसूस कर सकता था |

वह रहस्यमय स्त्री

कुछ समय बाद .....

मेरी गाल पर जोर का तमाचा पड़ा !

तमाचा पडते ही मेरी आंखें खुल गई.....

तमाचा इतनी जोर का था कि मुझे ऐसा लगा कि मेरा जबड़ा पूरा का पूरा घूम गया हो ...

मैंने जब सीधे सामने देखा तो एक विशालकाय काले रंग की स्त्री सामने बैठी हुई थी । उसकी आंखें लाल थी, जैसे उन में से खून टपक रहा हो, और दोनों तरफ के 2 दांत बाहर की तरफ निकले हुए । अजीब अजीब घटनाओं से दो-चार होने के बाद यह स्थिति मेरे लिए बहुत भयानक नहीं थी , इसलिए मैं किसी प्रकार संयत होकर अपना मंत्र जाप करता रहा ।

हर 5 मिनट पर उस महिला का एक थप्पड़ मेरे एक गाल पर पड़ता और मैं पूरा का पूरा हिल जाता .....

थोड़ा संयत होकर फिर से मंत्र जाप चालू करता तब तक दूसरे थप्पड़ का समय हो जाता .....

लगभग आधे घंटे तक यही स्थिति रही । थप्पड़ की मार से मेरी हालत बेहद खराब हो रही थी, लेकिन मेरे पास कोई ऑप्शन नहीं था । मैं गुरु को याद करके मंत्र जाप करने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था । लगभग 1 घंटे के बाद वह स्त्री वहां से लुप्त हो गई और मैंने राहत की सांस ली ।

वे रहस्यमय सर्प

लगभग साठ माला मंत्र जाप मेरा पूरा हो चुका था । कोई घटना नहीं हुई | सत्तरवी माला होते होते मैं काफी सहज और नियंत्रित हो चुका था | मैंने सोचा कि आज का कोटा पूरा हो गया है | इसलिए मैं फिर से अपने सहज स्थिति में आ चुका था और पूरे ध्यान से जप कर रहा था ।

लेकिन मैं गलत था .....

मैं आंखे बंद कर पूरे ध्यान से मंत्र जाप कर रहा था |

मुझे अचानक ऐसा लगा की मेरे शरीर पर कुछ रेंग रहा है !

यह बड़ी अजीब सी स्थिति थी ! मैंने धीरे से आंखें खोली !

जो दृश्य सामने दिखा वह भयानक था .....

पूरा कमरा काले रंग के सांपों से भरा हुआ था । सांप सभी वैरायटी के थे । कोई सांप दुबला पतला और लगभग छोटी उंगली के साइज का था तो कोई सांप लगभग हाथ की कलाई के बराबर था ।

जो सांप मेरे ऊपर चढ़ा हुआ था वह लगभग 2 इंच मोटा रहा होगा । उस सांप ने धीरे धीरे मुझे लपेटना चालू कर दिया । मुझे लपेटकर उसने अपना फन ठीक मेरी आंखों के सामने कर दिया । अब स्थिति बड़ी भयानक थी । मेरी आंखों से लगभग 6 इंच की दूरी पर अपना फन दिखाता हुआ वह खड़ा था । मेरी आंखें सीधे उसकी आंखों से टकरातीं । वह बीच-बीच में अपनी जीभ बाहर निकाल कर लपलपाता तो वह मेरी नाक से मुश्किल से एक या 2 सेंटीमीटर रह जाता था । मुझे ऐसा लगता था कि अब डँसा और तब डँसा .....

यह स्थिति लगभग 15 से 20 मिनट रही होगी | दर्द तो मुझे जबरदस्त हो रहा था । लेकिन गुरु कृपा से अपना संतुलन बना कर बैठा हुआ था । इसके बाद धीरे-धीरे उस सांप ने अपनी पकड़ ढीली करनी शुरु की | अब वह मुझे छोड़ कर सामने फ़न निकाल कर बैठ गया ।

यह स्थिति पहले से बेहतर थी लेकिन तब भी डरावनी तो थी ही ...

मैंने मंत्र जाप फिर से चालू किया !

सांप पूरे कमरे में टहल रहे थे ! जैसे मैगी नूडल्स पडे हो ! लगभग वैसी ही स्थिति थी !

पूरा कमरा उन से भरा हुआ था !

कुछ समय के बाद मैंने देखा की एक हरे रंग का सांप कमरे में प्रकट हुआ | उसका प्रकट होना था और सारे के साथ सारे सांप अचानक लापता हो गए | पूरा कमरा फिर से साफ हो गया |

अब सिर्फ वह हरा सांप मेरे सामने के आसन पर बैठा हुआ था | वह सांप लगभग दो से ढाई इंच मोटा होगा | उसके पूरे शरीर से सुनहरी चमक सी निकल रही थी | ऐसा लग रहा था जैसे गोल्डन कलर की एलइडी लाइट जल रही हो | अब वह सुनहरा सांप और में आमने-सामने थे | वह अपना फन निकाल कर सामने बैठा हुआ था | मैं अपने मंत्र जाप में लगा हुआ था |

अचानक उस साँप ने अपना फन मेरे मस्तक के बीचो बीच मार दिया , जहां पर तीसरे नेत्र की स्थिति दिखाई जाती है ! ठीक वहीं पर ! उसका फन मुझे महसूस हुआ !

उसके बाद वह वापस अपनी जगह पर बैठ गया | जहां उसने फन मारा था वहां से खून निकलना चालू हो गया | मैं महसूस कर रहा था वह रक्त मेरे नाक के ऊपर से बहता हुआ नीचे की तरफ टपक रहा था |

मंत्र जाप जारी था, और मैं यह सोच रहा था इसके बाद यह कहां काटेगा ?

अब वह सांप धीरे से मेरी ओर बढ़ने लगा और मेरी रीढ की तरफ घूम गया.....

मुझे ऐसा लगा जैसे वह मेरी रीढ की हड्डी पर सीधा चल रहा हो | मैं उसे अपनी रीढ की हड्डी पर महसूस कर रहा था !

जैसा कि आप सभी लोग जानते हैं अघोर साधनाएं निर्वस्त्र या दिगंबर की जाती है | वह सर्प उसी प्रकार मेरे रीढ की हड्डी पर चिपका हुआ था |

थोड़े समय बाद मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरे रीढ के हड्डी के ऊपर वाले चमड़े को किसी ने चाकू से चीर दिया हो | मैं खून बहता हुआ महसूस कर कर रहा था | धीरे धीरे वह सांप उस घाँव में अपना सर घुसा रहा था .....

कुछ समय के बाद वह सांप कटे हुए हिस्से से होता हुआ मेरे रीड की हड्डियों में से गुजरने लगा .....

मैं महसूस कर सकता था कि मेरे शरीर में वह किसी राड की तरह घुस रहा है.....

यह स्थिति लगभग 5 मिनट रही होगी | उसके बाद सब शांत हो गया शायद वह पूरी तरह से मेरे शरीर में प्रवेश कर चुका था .....

गुरु कृपा

उसके मेरे शरीर में प्रवेश करते ही मैं पृथ्वी से ऊपर उठने लगा .....

लगभग 4 फुट की ऊंचाई पर जाकर मेरा आसन स्थिर हुआ .....

उसी प्रकार हवा में बैठे-बैठे उस दिन का 108 माला मंत्र जाप संपूर्ण हुआ ....

मैंने गुरु चरणों में जाप को समर्पित किया और हाथ जोड़कर गुरु स्तुति की ।

तभी ! मेरे गुरुवर का दिव्य स्वरूप प्रकट हुआ !

उन्होंने सर पर हाथ फेरा !

आशीर्वाद दिया और निर्देशित भी किया –

अघोरानंद !

अब तुझे वापस गृहस्थ जीवन में लौटना है , और इस विद्या का ज्ञान अर्जन भी करना है और उसका प्रचार भी करना है .....

तभी कमरे मे बाबा घुसे .....

इसके बाद क्या हुआ मुझे नहीं पता चला .....

गुरु कृपा हि केवलम .....

जब मेरी आंख खुली तो मैं बाबा की झोपड़ी में था .....

मैं अभी भी बिस्तर से एक फुट ऊपर हवा में ही लेटा था .....

हवा में ही मेरे सिरहाने पर वही अप्सरा बैठी हुई थी.....

और बाबा मेरे सर पर हाथ फिरा रहे थे ।

मैं उन्हें देख कर मुस्कुराया और वह भी मुझे देख कर मुस्कुराए ।

मेरे होश मे आते ही धीरे धीरे मेरा शरीर वापस बिस्तर पर आ गया .....

मैं प्रणाम की मुद्रा में हाथ जोड़कर उठा और उनके चरण स्पर्श किया ।

पुष्पदेहा अप्सरा की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले जन्म में तूने इसे सिद्ध किया था | इस जन्म में

भी यह तेरे साथ होगी । यह केवल तुझे दिखेगी क्योंकि यह वायवीय देह मे है । जब भी तुझे किसी समस्या के समाधान की जरूरत हो तो यह तेरी सहायता कर मार्ग प्रशस्त करेगी ..... उसके बाद बाबा की गहन गंभीर वाणी गूंजी .....

" तू दो दिन समाधि की अवस्था में रहा, ऐसा दिव्य अनुभव योगियों को भी दुर्लभ होता है | गुरुवर के आदेश का पालन करना और जब भी कुछ असहज लगे मेरे पास आ जाना |"

वह दिन है और आज का दिन ... मेरी तंत्र यात्रा जारी है .....

गुरु कृपा हि केवलम .....

अनिल शेखर "अमस"

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।

2. अघोरानंद की अप्सरा ।

3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।

4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।

5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।

6. अघोरानंद और छाया की माया ।

7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।

8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।

9. परेतिन की शादी ।